7

''तुम्हारा स्वभाव ऐसा हो''

(फिलिप्पियों 2:5-11)

हमारे वचन पाठ में नये नियम की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक और डॉक्ट्रिन के सबसे बड़े भागों में से एक है। यह चुनौती यीशु का स्वभाव रखने की है: ''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो'' (फिलिप्पियों 2:5)। ''स्वभाव हो'' का अनुवाद *phroneite* से किया गया है, जिसका अर्थ ''सोचना'' या ''विचार बनाना या रखना'' है।[1] KJV में ''तुम्हारा मन ऐसा ही हो,'' जैसा कि मसीह यीशु का भी था।'' वेमाउथ में इस वाक्यांश का अनुवाद इस प्रकार है, ''तुम्हारा मिज़ाज वैसा ही हो जैसा मसीह यीशु का था।''

पौलुस ने फिलिप्पियों को एक होने का आग्रह किया था (2:1, 2)। उसने ज़ोर दिया था कि एकता की कुंजी अपने बजाय दूसरों के बारे में सोचना (आयतें 3, 4) है।

> पौलुस मसीह की देह के लिए स्वार्थी आंख, घमण्डी मन, चापलूसी सुनने के भूखे कान और खामोश रहने वाला मुंह, दूसरों के लिए जगह न देने वाला दिल और केवल अपनी सेवा करने वाला हाथ किसी काम के नहीं मानता था।[2]

अपने पाठकों को यह समझाने के लिए कि असली निस्वार्थपन में क्या शामिल है, उसने निश्चित उदाहरण यानी यीशु की ओर ध्यान दिलाया (आयतें 5-8)। एक अर्थ में पौलुस ने कहा, ''यदि तुम अपने दिल में यीशु को रखोगे, तो तुम एक हो *जाओगे;* तुम्हें शान्ति और एकता का आनन्द *मिलेगा।*'' फिलिप्पियों को दी गई चुनौती हमारे लिए भी है। यानी हमें अपने मन को यीशु की सोच में बदलने की आवश्यकता है। हम में से कइयों के लिए यीशु के पद चिह्नों पर चलना कठिन होता है (देखें 1 पतरस 2:21) क्योंकि हमारे पास यीशु का मन नहीं है।

आयत 5 की बड़ी चुनौती फिलिप्पियों 2:6-11 के बड़े संदेश में मिलती है। इन आयतों में यीशु के बारे में कही गई सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक है। गेरल्ड हाथोर्न ने इस वचन को फिलिप्पियों के नाम ''पत्र का सबसे महत्वपूर्ण भाग'' कहा और इसे ''[नया नियम] में लाजवाब ख्रिस्तशास्त्रीय रत्न'' घोषित किया।[3]

कइयों का मानना है कि फिलिप्पियों 2:6-11 एक आरम्भिक भजन है। इसे ''ख्रिस्त भजन'' कहा जाता है। यह पद स्वाभाविक रूप में दो भागों में बंटता है: मसीह की दीनता (आयतें 6-8) और मसीह की महिमा (आयतें 9-11)। पहला भाग दिखाता है कि मसीह का व्यवहार होने का क्या अर्थ है, जबकि दूसरा यह सुझाव देता है कि ऐसा व्यवहार रखना क्यों आवश्यक है।

सावधान: यह फिलिप्पियों की पुस्तक में केवल सबसे महत्वपूर्ण पद नहीं, बल्कि सबसे विवादास्पद भी है। एक लेखक ने टिप्पणी की है, ''इस पद के अर्थ के सम्बन्ध में व्याख्याकर्ताओं

में पाई जाने वाली विचार की विभिन्नता छात्र में निराशा भरने और उसे बौद्धिक अपंगता का शिकार बनाने के लिए काफ़ी है।''[4] टीकाकार यूनानी शब्दों के अर्थों पर उलझते हैं जिनका अनुवाद ''स्वरूप,'' ''वश में रखने की वस्तु,'' ''शून्य,'' इत्यादि है। इन शब्दों के अर्थों पर विवाद तो है पर इस पद के *संदेश* पर विवाद नहीं है कि यीशु ने हम से इतना प्रेम किया कि वह हमारी खातिर स्वर्ग को छोड़कर हमारे लिए मरने पृथ्वी पर आने को तैयार हो गया!

इन आयतों में आगे बढ़ते हुए मैं जहां तक हो सके स्पष्ट और विवाद रहित होने की कोशिश करूंगा। तौ भी मैं यूनानी धर्मशास्त्र पर पहले की अपेक्षा अधिक समय लगाऊंगा और आपको भी गम्भीरता से विचार करना पड़ सकता है। यदि आप अपनी सोच को बढ़ा नहीं पाते तो आप अगले पाठ में जा सकते हैं, पर मुझे उम्मीद है कि आप नहीं जाएंगे। यदि आप जाते हैं तो आप यीशु पर बाइबल की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा में से कुछ से चूक जाएंगे।

मसीह का व्यवहार दिखाया गया (2:6-8)

निस्वार्थ और अपने आपको शून्य करना

''ख्रिस्त-भजन'' का आरम्भ स्वर्ग में यीशु के पूर्व अस्तित्व से होता है: ''वह परमेश्वर के स्वरूप में था'' (आयत 6क)। यानी पृथ्वी पर आने से पहले यीशु स्वर्ग में परमेश्वर के साथ था। उसके पूर्व अस्तित्व के साथ जुड़ी अन्य आयतों में यूहन्ना 1:1, 2; 17:5; 2 कुरिन्थियों 8:9; कुलुस्सियों 1:15-17; इब्रानियों 1:2, 3क हैं। ''रूप'' के लिए हमारे वचन पाठ में *morphe* (आयतें 6, 7) और *schema* (''प्रकट होना''; आयत 8) दो यूनानी शब्द इस्तेमाल हुए हैं। यूनानी लोग आम तौर पर शब्दों का इस्तेमाल अदल-बदल कर करते थे, पर हमारे वचन पाठ में वे भिन्न हैं। संदर्भ में *morphe* उस व्यक्ति या वस्तु के आवश्यक स्वभाव के लिए है जो बदलता नहीं है, जबकि *schema* का इस्तेमाल बाहरी दिखावे के लिए है, जो बदल सकता है और बदल जाता है।[5] रिचर्ड गफिन ने लिखा है कि ''परमेश्वर का स्वरूप'' का अर्थ ''उन सब गुणों का जोड़ है जिनसे परमेश्वर बनता है ... परमेश्वर।''[6] NEB फिलिप्स, गुडस्पीड और मोफेट सहित कई अनुवादों में ''परमेश्वर का स्वभाव'' या ''ईश्वरीय स्वभाव'' या इससे मिलता-जुलता शब्द है। NCV में है ''मसीह स्वयं हर बात में परमेश्वर जैसा था।'' पौलुस ने और दावा किया कि यीशु ''परमेश्वर के तुल्य'' था (आयत 6ख)। आयत 6 की शब्दावली प्रेरित के यह पुष्टि करने का ढंग है कि यीशु वास्तव में और सचमुच में परमेश्वर था!

स्वर्ग में परमेश्वर के तुल्य होने के लिए ''परमेश्वर के स्वरूप में'' होने के अर्थ पर विचार करें। मसीह को मिलने वाली महिमा अर्थात उसे मिलने वाली श्रद्धा और उसके पास होने वाले अचम्भों की कल्पना करने की कोशिश करें। यूहन्ना 17 में अपने पिता से प्रार्थना करते हुए यीशु ने ''उस महिमा जो जगत की सृष्टि से पहले मेरी तेरे साथ थी'' (आयत 5) की बात की। हम जब तक ये समझ नहीं पाते कि प्रभु ने क्या त्यागा था, तब तक उसके निस्वार्थपन को कभी समझ नहीं सकते।

मसीह को ''परमेश्वर के स्वरूप में'' होने की आशिषें तो मिलती रही होंगी पर उसने ''परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में होने की वस्तु न समझा।'' मूल भाषा में ''वश में रखने

की वस्तु'' यूनानी संज्ञा *harpagmon* है। यह क्रिया शब्द *harpazo* से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''पकड़ना ...; बल से ले जाना, छीन लेना।''[7] *Harpagmon* का अर्थ ''आसान पकड़ के साथ किसी चीज़ को रखना'' हो सकता है।[8] मेरा मानना है कि इस वचन का अर्थ है कि यीशु ने स्वर्गीय स्थान की अपनी स्थिति को ''कसकर पकड़ा'' नहीं था। जे. बी. लाइटफुट के अनुसार, ''यह यूनानी पूर्वजों की सामान्य और वास्तव में लगभग विश्वव्यापी व्याख्या है, जिन्हें भाषा की शर्तों की सबसे सजीव समझ होगी।''[9]

प्रचारक भूखे कुत्ते को हड्डी देने का उदाहरण इस्तेमाल करते हैं। कुत्ता अपनी ताकत से उस हड्डी को पकड़ लेगा। यदि आप उससे उस हड्डी को छुड़ाने की कोशिश करते हैं तो ज़ोर से खींचने या झटका देने के बावजूद वह इसे नहीं छोड़ेगा। क्यों? उसे हड्डी खोने का डर है जबकि यीशु ऐसा नहीं था। अपने स्वर्गीय पद को ''पकड़े रखने'' के बजाय वह इसे छोड़ने को तैयार था ताकि वह हमारे लिए मरने को पृथ्वी पर आ सके। हाल ही के दिनों में इस विचार के एक और रूप ने प्रसिद्धि पा ली है कि यीशु ''परमेश्वर के तुल्य होने को वश में रखने की चीज़ नहीं मानना *उसके अपने ही लाभ के लिए* था।'' प्रभु के निस्वार्थपन को पढ़ने पर हमें इसे व्यक्तिगत प्रासंगिकता बनाने की आवश्यकता है। अपने आप से पूछें, ''क्या मैंने किसी चीज़ को पकड़ा हुआ है, कस कर रखा हुआ है, जिसे मुझे छोड़ने की आवश्यकता है ताकि मैं परमेश्वर और मनुष्य की बेहतर सेवा कर सकूं?''

''परन्तु'' अपनी स्वर्गीय स्थिति को पकड़े रखने के बजाय यीशु ने ''अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया'' (आयत 7)। ''शून्य कर दिया'' वाक्यांश ने विद्वानों को मोहित कर दिया है। इस प्रश्न पर कि ''उसने अपने आप को किससे शून्य किया?'' विवाद खड़ा हो गया है। ''शून्य'' के लिए यूनानी शब्द (*kenos*) ने मनुष्य रूप धारण करने की कथित ''अवतार'' की थ्योरी बन गई कि पृथ्वी पर आने के समय यीशु ने अपनी मूल ईश्वरीयता (अपने या अधिकतर ईश्वरीय गुणों) से ''स्वयं को खाली किया।'' इस शिक्षा के अनुसार ''अपने आप को शून्य कर दिया'' का अर्थ कुछ ऐसा है, जो है नहीं और अन्य स्थानों में दिए गए स्पष्ट वचनों के विपरीत है जो सिखाते हैं कि पृथ्वी पर भी यीशु परमेश्वर ही था।

यूहन्ना ने घोषणा की कि परमेश्वर ''वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया'' (यूहन्ना 1:1, 14)। स्वर्गदूत ने बताया था कि यीशु ''इम्मानुएल'' कहलाएगा जिस का अर्थ है 'परमेश्वर हमारे साथ' '' (मत्ती 1:23)। थोमा ने मसीह को ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर'' (यूहन्ना 20:28) कहा। देह धारण करने की डॉक्ट्रिन यह बताती है कि यीशु पूर्णतया मनुष्य था, परन्तु वह पूर्णतया परमेश्वर भी था। यीशु जब पृथ्वी पर आया तो उसने कुछ (मनुष्यता) को पहनने पर कुछ (ईश्वरीयता) को त्यागा नहीं। पॉल रीस ने इस उदाहरण का इस्तेमाल किया:

> कई साल पहले जब ड्यूक ऑफ़ विंड्सर प्रिंस ऑफ़ वेल था, तो एक दिन वह बकिंघम पैलस को छोड़कर पश्चिम की ओर कोयले की खदानों के देश में चला गया, उसने खदान में पहनी जाने वाली टोपी पहनी और अपनी आंखों से बर्तानवी उद्योग के कठिन और

> खतरनाक शाखा में काम करने वालों की स्थिति देखने गंदी सुरंगों में घुस गया। शाही परिवार के सदस्य के रूप में वह कोयले की खदान में भी उतना ही राजकुमार था जितना वह लंदन में महल में रहने के समय था। परन्तु शाही स्थिति के साथ उसकी समानता तो नहीं बदली पर अब वहां वह प्रिंस के बराबर नहीं था। उसने उन अनुभवों में जाने की सहमति जताई जो महल की शानो-शौकत में उसके पास कभी नहीं आई थी।[10]

आइए ''यीशु ने अपने आप को किससे खाली कर लिया'' के प्रश्न पर वापस आते हैं। अनुमानों की कोई कमी नहीं है। KJV अनुवादकों ने स्पष्टतया यह सोचा कि उसे अपने आप को अपने स्वर्गीय ''रुतबे'' से खाली किया। NASB के मार्जिन नोट में ''अपने विशेषाधिकारों को एक ओर रख दिया'' है। जे. बी. लाइटफुट ने लिखा है कि उसने अपने आप को ''ईश्वरीयता की महिमा, शान'' से उतार दिया।[11] क्योंकि यह वचन उन गुणों की बात स्पष्ट नहीं करता जो यीशु ने त्यागे थे इसलिए हमें अनुमान से कोई अधिक लाभ नहीं मिलता। सम्भवतया आयत 7 के अन्तिम भाग को इस आयत के पहले भाग की व्याख्या के रूप में लेना बेहतर होगा कि उसने ''दास का स्वरूप किया और मनुष्य की समानता में'' होकर ''अपने आप को शून्य कर दिया।'' CJB में है कि ''उसने अपने आप को खाली किया, इस बात में कि उसने दास का रूप ले लिया।''

सेवा करते और सहानुभूतिपूर्वक

आयत 7 में ''दास'' का अनुवाद गुलाम के लिए इस्तेमाल होने वाले यूनानी शब्द *doluos* से किया गया है। अनुवादित शब्द ''स्वरूप'' वही है, जिसका इस्तेमाल आयत 6 में किया गया है। स्वर्ग में यीशु में परमेश्वर की सभी खूबियां थीं। पृथ्वी पर उसने गुलाम वाली सभी खूबियां ले लीं। यीशु का जन्म वास्तव में गुलाम वर्ग में नहीं हुआ, बल्कि वह परमेश्वर पर निर्भर था जिस कारण मसीह भी मनुष्यजाति की ज़रूरतों पर विशेषकर उद्धार की आवश्यकता का गुलाम था। यीशु के दास होने पर कई आयतें हैं (देखें मत्ती 20:28; मरकुस 10:45; लूका 22:27); दास के रूप में यीशु का श्रेष्ठ उदाहरण वह था, जब उसने चेलों के पांव धोए थे (यूहन्ना 13:5)। अन्तर स्पष्ट है: यीशु परमेश्वर के तुल्य होने (ऊंचे से ऊंचे रुतबे जिसकी कल्पना की जा सकती है) से गुलाम होने (नीचे से नीचे रुतबे तक जिसकी कल्पना की जा सकती है) आ गया। 2 कुरिन्थियों 8:9 में हमें पौलुस के शब्द याद आते हैं: ''वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।''

मसीह का नीचे आने का सफ़र ''मनुष्य की समानता में'' उसके होने के साथ आरम्भ हुआ (फिलिप्पियों 2:7ख)। पहली सदी के खत्म होने से पहले कुछ लोगों ने ''समानता'' शब्द का इस्तेमाल यह सिखाने की कोशिश में किया कि यीशु मनुष्यों के ''जैसा'' था, वास्तव में मनुष्य नहीं। अन्य शब्दों में वह वास्तव में कभी मनुष्य नहीं था। यूहन्ना ऐसे ही भ्रांतिपूर्ण विचार का सामना कर रहा था, जब उसने कहा कि यीशु ''*देहधारी* हुआ'' (यूहन्ना 1:14) और जब उसने लिखा कि ''... जो कोई आत्मा मान लेती है कि यीशु मसीह *शरीर में* होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है'' (1 यूहन्ना 4:2)। कई आयतें इस बात पर ज़ोर देती हैं कि यीशु का मनुष्य बनना अवास्तविक नहीं बल्कि वास्तविक था। उदाहरण के लिए इब्रानियों के पत्र के लेखक ने कहा कि वह ''*सब बातों* में अपने भाइयों के समान'' बना (इब्रानियों 2:17)।

इब्रानियों 2:17 में ''समान बना'' का अनुवाद उसी मूल यूनानी शब्द से किया गया है जिससे फिलिप्पियों 2:7 में ''समानता'' शब्द का अनुवाद हुआ है।

हम पक्का नहीं कह सकते कि पौलुस ने 2:7 में ''समानता'' शब्द का इस्तेमाल क्यों किया। कइयों का मत है कि ज़ोर इस बात पर है कि एक प्रकार से यीशु अन्य मनुष्यों ''जैसा'' था क्योंकि वह पूर्णतया मनुष्य था, परन्तु एक अर्थ में, वह उनके ''जैसा नहीं'' था क्योंकि वह पूर्णतया परमेश्वर भी था। एक आसान व्याख्या है: ध्यान दें कि आयत 7 में अनुवादित शब्द ''हो गया'' (यू.: *ginomai*) का अर्थ ''पैदा होना'' हो सकता है।[12] RSV में ''लोगों की समानता में पैदा होना है।'' ''मनुष्यों की समातना में हो गया'' वाक्यांश सम्भवतया यीशु के इस संसार में आने के लिए है कि उसका जन्म वैसे ही हुआ जैसे सब लोगों का होता है।

आयत 7 में मनुष्य के साथ यीशु की असमानता पर नहीं, बल्कि उसकी समानता पर ज़ोर दिया गया है। मसीह स्वर्गदूत की ''समानता में'' आ सकता था और मनुष्यजाति चकित रह जाती। वह परमेश्वर की ''समानता में'' आ सकता था जिससे लोग उसे पूजने लगते। परन्तु यदि उसे अपने मिशन को पूरा करना था तो उसे मनुष्यों की ''समानता में'' आना आवश्यक था (देखें रोमियों 8:3)। यीशु को हमारे जैसा बनाया गया इस कारण वह हमारे साथ सहानुभूति कर सकता है और हमारी सहायता कर सकता है (देखें इब्रानियों 2:17, 18; 4:15, 16)। इससे भी महत्वपूर्ण है कि वह हमारे लिए मर सका (1 कुरिन्थियों 15:3)।

यीशु को हमारी जगह मरने से पहले देह क्यों धारण करनी पड़ी? एक लेखक ने एक आदमी का उदाहरण दिया जिसे दलदल में से किसी और के गारा ले आने से पहले गारा लेने के लिए नीचे जाना आवश्यक था, या एक लेखक ने दलदल में से किसी को निकाल लिए कीचड़ में जाने वाले व्यक्ति, या डूब रहे किसी व्यक्ति को बचाने के लिए पानी में जाने वाले व्यक्ति का उदाहरण समझाया।[13] परन्तु कोई भी उदाहरण पर्याप्त नहीं है। हम कभी भी पूरी तरह नहीं समझ पाएंगे कि ''मनुष्य की समानता में'' आना यीशु के लिए क्यों आवश्यक था; परन्तु बाइबल यही बताती है और हम इसे विश्वास से मान लेते हैं।

आयत 8 में मनुष्यजाति के साथ मसीह की पहचान जारी रहती है। आयत का आरम्भ होता है, ''और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर ...।'' यूनानी शब्द (*schema*) का अनुवाद ''प्रकट होना'' ''स्वरूप'' के लिए हमारे वचन पाठ में इस्तेमाल किया गया दूसरा शब्द है। जैसे पहले ध्यान दिलाया गया था कि इस शब्द का अर्थ ''बाहरी रूप है, जो बदल सकता है और बदल जाता है।'' यीशु का आवश्यक स्वभाव (*morphe*) कभी नहीं बदला, पर नवजात शीशु से लेकर व्यस्क मनुष्य बनने तक उसका रूप (*schema*) बदल गया। हमें मनुष्य के रूप में लोगों के बीच में उसके चलते हुए मसीह के जीवन और सेवकाई का स्मरण आता है जिसमें उसने मनुष्य होने की पीड़ा और दुख को अपना लिया (देखें यशायाह 53:3)।

मैं एक बार फिर उस पर प्रकाश डालने के लिए रुकता हूं जो यीशु ने इस पृथ्वी पर आने के लिए त्यागा। अपने मन में मैं दो समानांतर रेखाएं बनाने की कोशिश करता हूं: अपनी टांगों के इस्तेमाल को खोने का विश्वस्तरीय धावक के लिए क्या अर्थ होगा? किसी कलाकार के लिए अपनी आंखों का इस्तेमाल खोने का क्या अर्थ होगा? हम में से किसी के लिए भी ''बिना टांगों और बिना हाथों के होना (कुआड्रिप्लेजिक) होने का क्या अर्थ होगा। जो अपनी भुजाओं और

टांगों का इस्तेमाल नहीं कर सकता? इन प्रश्नों पर विचार करते हुए मुझे यह अहसास हुआ कि कोई भी तुलना अफ़सोसजनक ढंग से अपर्याप्त है। मैं यह समझना आरम्भ नहीं कर सकता कि स्वर्ग की महिमा के आनन्द का क्या अर्थ है और फिर अचानक अपने आप को मनुष्य जाति की निर्बल और नाशवान देह में बंद पाऊं। मैं केवल परमेश्वर को धन्यवाद दे सकता हूं क्योंकि उसने मुझसे इतना प्रेम किया।

मेरा मुक्तिदाता पृथ्वी पर क्यों आया,
और इतना दीन क्यों बन गया?
उसने इतना दरिद्रता भरा जन्म क्यों चुना?
क्योंकि वह मुझसे प्रेम करता है!

उसने दुख, क्लेश, पीड़ा का
कड़वा कटोरा क्यों पीया?
क्रूस पर उसे क्यों उठाया गया?
क्यों उसने मुझसे इतना प्रेम किया![14]

शान्त और बलिदान करने वाला

''मनुष्य के रूप में प्रगट होना'' मसीह के नीचे आने के सफ़र का अन्त नहीं था। उसे इसके भी आगे क्रूस तक जाना था। ''मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली'' (फिलिप्पियों 2:8)।

यीशु को मरने की *आवश्यकता* नहीं थी। और लोग भी बिना मरे इस पृथ्वी से गए थे-हनोक (उत्पत्ति 5:24; इब्रानियों 11:5) और एलिय्याह (2 राजाओं 2:11), और यीशु भी बिना मरे जा सकता था (देखें यूहन्ना 10:18)। परन्तु *यदि* मुझे और आप को अनन्त जीवन की आशा दिलानी थी तो उसके लिए मरना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 15:3)। इसीलिए वह ''मृत्यु तक'' और यह नहीं कि कोई आम मृत्यु बल्कि मनुष्य द्वारा ईजाद की गई सबसे घृणित मृत्यु सहने के लिए अपने आप को देने को तैयार था। क्रूसारोहण के द्वारा मृत्यु फिनीके और फारसी लोगों से ली गई थी और इसे रोमियों द्वारा पूरा किया गया था। यह यहूदियों के लिए लज्जा का माध्यम था (व्यवस्थाविवरण 21:23; गलातियों 3:13) और अन्यजातियों के लिए अपमानजनक मूर्खता (1 कुरिन्थियों 1:23)। ''शिष्ट रोमी समाज में 'क्रूस' शब्द अपशकुन माना जाता था और इसे आम बातचीत में इस्तेमाल नहीं किया जाता था।''[15] ''क्रूस मनुष्य के लिए अपमान का चरम,''[16] ''परमेश्वर के सिंहासन से सीढ़ी के नीचे से बजी घंटी'' था।[17]

यीशु को ऐसी अपमानजनक और पीड़ादायक मृत्यु सहने के लिए किस बात ने तैयार किया? हमने पहले ही सुझाव दिया है कि उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह हम से प्रेम करता था (गलातियों 2:20)। फिलिप्पियों 2:8 में एक और कारण बताया गया है और वह परमेश्वर की इच्छा को मानना है। वह ''मृत्यु तक आज्ञाकार बना।'' अपनी व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान यीशु ने कहा, ''मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूं'' (यूहन्ना 6:38)। गतसमनी के बाग में उसने उसके साथ जो उसके साथ

था संघर्ष किया, पर अन्त में इन शब्दों के साथ प्रार्थना की: ''... तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो'' (लूका 22:42)। अन्त में, वह ''मृत्यु तक आज्ञाकारिता के पथ पर चला–क्रूस पर अपनी मृत्यु पर'' (फिलिप्पियों 2:8; TEV)। परमेश्वर के अधीन होने के कारण यीशु ने हमारे लिए अन्तिम बलिदान दिया।

पौलुस ने इस बात पर क्यों जोर दिया कि यीशु स्वार्थरहित, अपने आप को खाली करने वाला, सेवा करने वाला, सहानुभूतिपूर्वक, आज्ञाकार और बलिदान करने वाला था? क्या यह हमारे लिए मसीह के प्रेम और उसकी परवाह की तारीफ़ करने को समझने में केवल हमारी सहायता के लिए था? हम पर संदेश का यह असर तो होना चाहिए था पर पौलुस का उद्देश्य थियोलॉजी बताना नहीं, बल्कि जीवनों को बदलना था। वह फिलिप्पियों को बताना चाहता था कि उस एकता, शांति को बनाने के लिए उन्हें यीशु के जैसे बनना आवश्यक था। उसने उन्हें ''उस मार्ग पर चलने के लिए जिसे मसीह ने पहले से बना दिया है'' बुलाया।[18] पवित्र आत्मा ने हमें बताना चाहा कि हम भी यीशु के व्यवहार को अपना लें। अपने चेलों को प्रभु की चुनौती विश्वव्यापी चुनौती है।

> ... वरन जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे (मरकुस 10:43–45)।

यीशु ने यह भी कहा, ''तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले'' (मत्ती 16:24)। अफ़सोस की बात है कि हम में से अधिकतर लोग क्रूस के बिना मुकुट को चाहते हैं, या जैसा एक लेखक ने इसे कहा है, हम खून बहाए बिना आशिषों को चाहते हैं।[19] अपने विचारों को बाहर लाना सीखना कितना कठिन है!

सबसे चुनौती भरे गीतों में से एक जिन्हें मैं जानता हूं उसका शीर्षक है ''मेरा कुछ नहीं पर तेरा सब कुछ।'' इस गीत के आरम्भिक बोलों का अनुवाद है:

> हे, कड़वी पीड़ा और दुख
> वह समय कभी आएगा,
> जब मैं गर्व से यीशु से कहूं,
> ''वह समय कभी था
> जब मैं गर्व से यीशु से कहता,
> सब कुछ मेरा, तेरा कुछ भी नहीं।''

इसका दूसरा भाग है ''कुछ–कुछ मेरा, और कुछ–कुछ तेरा,'' जबकि तीसरा ''थोड़ा मेरा और बहुतेरा तेरा'' तक बढ़ जाता है। अन्त में, अन्तिम आयत कहती है:

> ऊंचे से ऊंचे आकाशों से ऊंचा,

गहरे से गहरे सागर से गहरा,
हे प्रभु, तेरा प्रेम अन्त में जीत गया,
''मेरा *कुछ नहीं, सब कुछ* है तेरा।''[20]

इस गीत को गाने से हमें अपने मनों को जांचने की दिलेरी मिलनी चाहिए कि निस्वार्थपन के मार्ग पर हम कहां हैं? मुझे अपने स्वभाव को मसीह का स्वभाव बनाने में परमेश्वर की सहायता चाहिए? शायद आपको भी।

मसीह के स्वभाव को प्रतिफल मिला (2:9-11)

ऊंचा किया जाना

हम प्रकट किए गए मसीह के व्यवहार से प्रतिफल दिए गए मसीह के व्यवहार पर आते हैं। आयत 9 आरम्भ होती है, ''इस कारण [क्योंकि यीशु अपने आप को दीन करने को तैयार हुआ] परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, ...।'' यीशु ने अपने आपको ऊंचा नहीं किया क्योंकि गुलाम को कोई दूसरा ही ऊंचा कर सकता है। ''अति महान किया'' का अनुवाद मिश्रित यूनानी शब्द (*huperupsoen* जो *huperupsosoo* से है) से लिया गया है जो ''ऊंचा'' (*hupsoo*) के लिए शब्द को ''ऊपर'' (*huper*) पूर्वसर्ग से मिलाता है। *Hyper* का समानांतर लातीनी शब्द ''अति'' है। परमेश्वर ने यीशु को ''अति ऊंचा'' किया![21] उसे ऊंचे पद पर बहाल किया गया जो पृथ्वी पर आने से पहले स्वर्ग छोड़कर आने से पहले उसके पास था। उसका दीन होना चरणों में था पर उसका ऊंचा किया जाना एक ही बड़े कार्य में हुआ! यीशु के ऊंचा किया जाने में उसका जी उठना, उसका ऊपर उठाया जाना और उसको महिमा दिया जाना शामिल है। पर इस वचन पाठ में जोर उसके परमेश्वर के दाहिने हाथ महिमा पाने का है। उसे ''स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया'' (मरकुस 16:19ख)।

स्वर्ग में परमेश्वर ने ''उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है'' (आयत 9ख)। ''श्रेष्ठ'' का अनुवाद आयत के पहले भाग में ''अति'' *huper* के लिए पूर्वसर्ग से किया गया है। हम पक्का नहीं बता सकते कि उसे क्या नाम दिया गया था। कइयों का सुझाव है कि यह वह नाम है जिसे इस समय केवल परमेश्वर जानता है। यह हो सकता है पर क्योंकि पौलुस स्पष्टतया अपने पाठकों के मनों में मसीह के नाम को ऊंचा करना चाहता था, सो इस कारण ऐसा निष्कर्ष प्रेरित के उद्देश्य के लिए अव्यावहारिक लगता है। अगली आयत से हमें यह विश्वास हो सकता है कि पौलुस के कहने का अर्थ ''यीशु का नाम'' (आयत 10) है। कई लेखकों का मानना है कि ''नाम'' शब्द का इस्तेमाल यहां ''पदनाम'' के अर्थ में है और इस विचार को प्राथमिकता देता है कि यह पद ''प्रभु'' था (आयत 11)।[22] अन्य आयत 11 वाले पूर्ण पद ''प्रभु यीशु मसीह'' का पक्ष लेते हैं। यूनानी में ''यीशु मसीह'' और ''प्रभु'' के बीच ''होना'' कोई क्रिया नहीं है; मूल में केवल ''यीशु मसीह प्रभु'' है। हमारे लिए ''नाम'' की पहचान आवश्यक नहीं है पर हमें केवल यह जानना आवश्यक है कि यह ''सब नामों में श्रेष्ठ'' है (आयत 9)। पृथ्वी पर तो यीशु अपमानित किया गया था पर स्वर्ग में उसे महिमा दी गई। पृथ्वी पर वह सबसे छोटा सेवक था पर स्वर्ग में उसे सब नामों से ऊपर नाम दिया गया है!

परमेश्वर ने यीशु को महिमा दी है इस कारण सारी सृष्टि को उसकी जय जयकार करनी चाहिए: ''कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है'' (आयतें 10, 11क)। यीशु के नाम पर घुटने टेकने का अर्थ उसकी आराधना करना है (देखें इफिसियों 3:14)। यीशु को प्रभु के रूप में मानने का अर्थ उसे खुलकर और सबके सामने सब का हाकिम मान लेना है। ''जो पृथ्वी के नीचे हैं'' अभिव्यक्ति का अर्थ सम्भवतया ''मृतक'' है (देखें रोमियों 14:9)। ''जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं'' तीन बार देना यह कहने का अनोखा ढंग है कि यीशु ''वैश्विक और विश्वव्यापी'' प्रभु है,[23] इस कारण हर किसी को हर जगह उसका अंगीकार करना चाहिए। आज बहुत से लोग ऐसा करने से इनकार करते हैं, परन्तु ''अन्त में सब चाहे या अनचाहे उसे प्रभु मानेंगे ...,''[24]

इस वचन की समाप्ति यह कहकर होती है कि यह सब ''परमेश्वर पिता की महिमा के लिए'' (आयत 11क)। ''परमेश्वर की महिमा सदा से, हर चीज़ का अन्तिम उद्देश्य या लक्ष्य रहा है।''[25] यह परमेश्वर की महिमा के लिए होगा, क्योंकि जब मसीह की महिमा होती है तो परमेश्वर की भी महिमा होती है। इसके अलावा परमेश्वर की महिमा इसलिए भी होती है क्योंकि उसके अपने ईश्वरीय नमूने से यीशु ने दिखाया कि परमेश्वर का असली स्वभाव पाना नहीं, बल्कि देना है।

प्रोत्साहन

9 से 11 आयतों में फिलिप्पियों के लिए क्या सबक था या थे? यह तथ्य कि यीशु प्रभु है उनके उसके नमूने को मानने का ज़बर्दस्त कारण होना चाहिए था। मेरा मानना है कि इन आयतों में एक और प्रोत्साहन का संकेत भी है: ''अपने आपको दीन करने के बाद यीशु को महिमा दी गई है इस कारण तुम भी अपने आपको दीन करो और उसकी तरह ही दूसरों को पहल दो, तो अन्त में तुम्हें भी महिमा दी जाएगी!'' फ्रेड क्रेडॉक ने यह स्पष्ट समीक्षा दी है: ''अब अन्त में, बाद में आगे!''[26] कुछ लोग ऐसी प्रेरणा की ''सादगी'' पर आरोप लगाते हुए ऐसे निष्कर्ष पर आपत्ति करते हैं। परन्तु प्रतिफल की अवधारणा पवित्र शास्त्र में (देखें मत्ती 25:21) उस विशेष प्रतिज्ञा के साथ कि दीन होने के बाद ऊंचा किया जाना (मत्ती 23:12; लूका 14:11; 18:14; 1 पतरस 5:6)।

आम मिलती है। जीवन में से गुजरते हुए, समस्याओं का सामना करते हुए और निर्णय लेने पर प्रभु हम से हमेशा ''e factor'' को ध्यान में रखने की इच्छा करता है। ''E factor'' क्या है। *Eternity* अनन्तकाल का फैक्टर। यह जीवन छोटा है और इसका कुछ पता नहीं कि कब खत्म हो जाए (अय्यूब 14:1; याकूब 4:14)। पसन्द चुनने के संघर्षों में हमें अपने आप से पूछना चाहिए, ''अनन्तकाल में परिणाम क्या होंगे?''

मुझे और आपको ''स्वभाव ... जो मसीह यीशु का था'' को अपनाने के लिए क्यों कोशिश करनी चाहिए? हमें ऐसा अपने प्रभु की आज्ञा मानने, मसीह के रूप में कुछ बन सकने, वह बनने और मसीह की देह में शान्ति और एकता को बढ़ावा देने के लिए करना चाहिए। इसके साथ ही यह समझना कितना अद्भुत है कि यदि हम अपने आपको दीन करते हैं तो एक दिन

हमें भी महिमा दी जाएगी!

सारांश

फिलिप्पियों 2:5–11 हमारे जीवनों पर ज़बर्दस्त प्रभाव हो सकता है यदि हम इसे प्रभाव छोड़ने दें। किसी ने इन आयतों की तुलना सूर्य की तेज़ किरणों से की है।[27] सूर्य हमारे जीवनों को आशीष दे सकता है या हम बंद और अंधेरे कमरे में इससे छिप सकते हैं। सूरज तो रहेगा पर हमें केवल अंधकार और ठण्डक ही मिलेगी। मेरी प्रार्थना है कि आप फिलिप्पियों 2:5–11 वाली अद्‌भुत सच्चाइयों की उपेक्षा न करें, बल्कि उन्हें अपना लें वे आपके जीवन को बदल सकती हैं।

टिप्पणियां

[1]विलियम एफ़. अर्डंट एंड एफ़. विल्बर गिंगरिच, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियंस लिटरेचर* (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस 1957), 874. [2]फ्रेड बी. क्रेडॉक, *फिलिप्पियंस,* इंटरप्रेटेशन सीरीज़ (अटलांटा: जॉन नॉक्स प्रैस, 1985), 38. [3]गेरल्ड एफ़ हाथोर्न, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री,* अंक 43, *फिलिप्पियंस,* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 76, 79. [4]ए. बी. ब्रूस, *दि ह्यूमिलिएशन ऑफ क्राइस्ट* (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1900), 11. [5]इन शब्दों पर हमारे अध्ययन का स्रोत विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री, एक्सपोज़िशन ऑफ फिलिप्पियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1962), 104 है। [6]रिचर्ड बी. गफिन, जूनि., नोट्स ऑन फिलिप्पियंस, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1805. [7]*दि एनेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, लिमिटेड, 1971), 52. [8]वही। [9]जे. बी. लाइटफुट, *दि एपिस्टल ऑफ सेंट पॉल–3: दि फर्स्ट रोमन कैप्टिविटी 1: एपिस्टल टू द फिलिप्पियंस* (लंदन: मैक्मिलन एंड कं., 1913), 134–35. [10]पॉल रीस, *दि एपिस्टल टू द कोलोशियंस, फिलिप्पियंस एंड फिलेमन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1964), 44.

[11]लाइटफुट, 45. [12]अर्डंट एंड गिंगरिच, 157. [13]मैन्फोर्ड जॉर्ज गुज़के, *प्लेन टॉक ऑन फिलिप्पियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: लैम्पलाइटर बुक्स, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 89. [14]जे. जी. डेयले, ''वाय डिड माई सेवियर कम टू अर्थ?'' *सौंग्स ऑफ फ़ेथ एंड प्रेज़,* संक. व संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [15]एफ. एफ. ब्रूस, *फिलिप्पियंस,* गुड न्यूज कमैंट्रीज़ सीरीज़ (सेन फ्रांसिस्को, कैलिफोर्निया: हार्पर एंड रोअ पब्लिशर्स, 1983), 47. [16]हॉथोर्न, 90. [17]आर्किबल्ड थॉमस रॉबर्टसन, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 4, *दि एपिस्टल ऑफ पॉल* (नैशविल्ले: ब्राडमैन प्रैस, 1931), 445. [18]आई-जिन लोह एंड यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांस्लेटर'स हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर टू द फिलिप्पियंस* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1977), 55. [19]वारेन डब्ल्यू. विर्यसबे, *दि बाइबल एसक्पोज़िटरी एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 75 में उद्धृत जे. एच. जोवट। [20]थियोडोर मोनोड, ''नन ऑफ़ सेल्फ एंड ऑल आफ़ धी'' *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एंड प्रेज़,* संक व संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।

[21]कई बार मैं यहां जोड़ देता हूं, ''यीशु ने दीनता के विद्यालय *summa cum laude* से 'अत्यधिक सम्मान के साथ' पढ़ाई की।'' [22]एफ. एफ. ब्रूस, 48, 50; रॉबर्टसन, 446; लोह एंड निडा, 63. ये व अन्य लेखक शीर्षक ''प्रभु'' के पक्ष में ज़ोरदार तर्क देते हैं। [23]लोह एंड निडा, 62. [24]गफिन, 1805. [25]हैंड्रिक्सन, 118. [26]क्रेडॉक, 42. [27]गुज़के, 96.